Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 23/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -
मनोगतिकी सिद्धान्त का प्रभाव **(Impact Psychodynamic Theory)**

मनोगतिकी सिद्धान्त सबसे पहली बार यह दिखाने में समर्थ हुआ कि मानव मनोवैज्ञानिक

प्रक्रियाओं में क्षुब्धता होने से मानसिक विकृतियों की उत्पत्ति होती है। जिस तरह से मेडिकल मॉडल ने असामान्य व्यवहार के कारण के रूप में प्रचलित अंधविश्वास को हटाकर उसके जगह पर आंगिक विकृति विशेषकर मस्तिष्कीय विकृति को प्रतिस्थापित किया था, ठीक उसी तरह से मनोगतिकी मॉडल ने मस्तिष्कीय विकृति को हटाकर उसके जगह पर अतिरंजित अहं प्रतिरक्षाओं को असामान्य व्यवहार के कारण के रूप में प्रतिस्थापित किया। यदि हम ध्यानपूर्व देखें, तो पायेंगे कि मनोगतिकी सिद्धान्त ने असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति एवं स्वरूप को कई दृष्टिकोणों से प्रभावित किया है जिसका वर्णन इस प्रकार हैं-

(1) अचेतन अभिप्रेरण एवं अहं रक्षात्मक प्रक्रियाएँ असामान्य व्यवहार में गत्यात्मक भूमिका निभाती हैं। फ्रायड ने चेतन एवं अचेतन मन के विषय में जानने के लिए मुक्त विश्लेषण एवं मुक्त साहचर्य जैसी प्रविधियाँ दी हैं।

(2) आरम्भिक बाल्यावस्था की अनुभूतियों की, मानव के बाद के व्यक्तित्व समायोजन तथा कुसमायोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अर्थत् यदि ऐसी अनुभूतियाँ अनुकूल होती है तो उससे बाद में व्यक्तित्व में समायोजन विकसित होता है तथा ऐसी अनुभूतियाँ प्रतिकूल होने पर उससे बाद में व्यक्तित्व में कुसमायोजन विकसित होता है।

(3) लैंगिक इच्छाएँ विशेष रूप से दमित लैंगिक इच्छाएँ मानव व्यवहार को विचलित करने में तथा मानसिक विकृति को उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(4) कुछ विशेष प्रकार की मानसिक विकृतियाँ उस समय विकसित हो जाती हैं जब व्यक्ति अत्यंत कठिन समस्याओं के समाधान में लगा होता है। उनका यह प्रयास और कुछ नहीं बल्कि सामान्य अहं रक्षात्मक प्रक्रमों का मात्र एक अतिरंजित रूप होता है।

मनोगतिकी मॉडल का मूल्यांकन
Evaluation of Psychodynamic Model

मनोगतिकी मॉडल का मूल्यांकन इसके गुण एवं दोष का पता लगाकर किया जा सकता हैं।

मनोगतिकी मॉडल के गुण (Merits of Psychodynamic Model) मनोगतिकी मॉडल के कुछ गुण एवं अवगुण हैं। इसके प्रमुख गुण निम्नांकित हैं-

(1) मनोगतिकी मॉडल में सामान्य एवं असामान्य व्यवहार की व्याख्या के लिए एक समान मनोवैज्ञानिक नियमों का उल्लेख किया गया है। इसमें बताया गया है कि चिंता अचेतन प्रक्रियाएँ, मानसिक संघर्ष तथा रक्षात्मक प्रक्रम जैसी वस्तुएँ न केवल असामान्य व्यवहार के लिए सही है बल्कि ये सभी वस्तुएँ सामान्य व्यवहार के लिए भी सही है तथा उन पर भी समान रूप से लागू होती है। मानसिक संघर्ष का परिणाम तथा रक्षात्मक प्रक्रमों के स्वरूप द्वारा यह निर्धारित होता है कि व्यवहार सामान्य होगा या असामान्य।

(2) मनोगतिकी मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास की एक विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह असामान्य व्यवहार को समझने के लिए एक बोधगम्य पृष्ठभूमि तैयार करता है।

(3) मनोगतिकी मॉडल ने मनोगतिकी प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए एवं मनोवैज्ञानिक देखों व कष्टों का उपचार करने के लिए विशेष विधि का वर्णन किया है जो अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि फ्रायड ने असामान्य व्यवहारों के उपचार के लिए एक विधि प्रदान करके मनोवैज्ञानिक विकृतियाँ तथा कष्टों के विषय में सोचने के लिए एक आशावादी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मनोगतिकी मॉडल के दोष **(Demerits of Psychodynamic Model)**

इन गुणा म गुणों के बावजूद मनोगतिकी सिद्धान्त में कुछ दोष भी हैं जो इस प्रकार हैं-

(1)मनोगतिकी मॉडल इतना जटिल एवं कठिन है कि इसकी वैधता न तो सिद्ध की जा सकती है और न ही खंडित की जा सकती है। इसका कारण यह है कि इस मॉडल में मानव व्यवहार को एक से अधिक कारकों द्वारा एवं आवश्यकता से अधिक मनोवैज्ञानिक ऊर्जाओं द्वारा निर्धारित होते माना गया है। इसके अलावा रोगी के अचेतन अभिप्रेरक को देखा नहीं जा सकता है केवल उसका अनुमान लगाया जा सकता है। फलतः इसके अस्तित्व एवं प्रभाव की पुष्टि विश्वास के साथ नहीं की जा सकती है।

(2) मनोगतिकी मॉडल के विभिन्न अवधारणाओं एवं नियमों का प्रयोगात्मक सत्यापन आज भी नहीं हो पाया है।

(3) इस मॉडल में असामान्य व्यवहार की व्याख्या में शीलगुण तथा प्रवृत्तियों आदि पर तो पर्याप्त बल दिया गया है जबकि कुछ कारकों की अवहेलना की गई है। कई मनश्चिकित्सकों तथा नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि इसमें सामाजिक एवं परिस्थितिजन्य कारकों, जिसका प्रभाव भी असामान्य व्यवहार पर पड़ता है, के विषय में इस मॉडल में कुछ भी नहीं कहा गया है।

(4) असामान्य व्यवहार को समझने के लिए व्यक्तिगत विकास तथा मूल्य विकास से सम्बद्ध अभिप्रेरकों की इस मॉडल में पर्याप्त उपेक्षा की गई है।

(5) इस मॉडल में यौन प्रणोद पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है। साथ ही इसमें मानव प्रकृति को निराशावादी दृष्टिकोण से देखा गया है जबकि अचेतन प्रक्रियाओं की भूमिका का अतिरंजित रूप दिखाया गया है।

इन आलोचनाओं के बावजूद आज भी मनोगतिकी मॉडल असामान्य व्यवहार के स्वरूप को समझने एवं उसका उपचार करने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।